

मुगल साम्राज्य में शहरीकरण

संजय कुमार*

प्राथमिक अध्यापक, निगम प्रतिभा बाल विधालय, नरेला मंडी 1पेज

सारांश – “मुगलकालीन भारत में देश की अधिकतर जनसंख्या गांवों में रहती थी। नगरों या कस्बों में रहने वालों की संख्या अपेक्षाकृत रूप से बहुत कम थी परन्तु कम जनसंख्या होते हुए भी नगरों का उस समय के जन-जीवन तथा इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण स्थान रखता था। मुगलकाल में नगर व्यापारिक और सामरिक रूप से बहुत समृद्ध थे जिसके कारण यहा यातायात व संचार के मुख्य केन्द्र थे। हस्तशिल्प और उद्योगों के केन्द्र होने के कारण अनेक भारतीय नगरों ने यहाँ निर्मित वस्तुओं की विशिष्टता और गुणवत्ता के कारण विदेशों में भी प्रसिद्धि प्राप्त कर ली थी। बन्दरगाहों पर अनेक व्यापारिक नगरों का उदय हुआ सबसे महत्वपूर्ण बात ये थी की नगर राजनीति प्रशासन के केन्द्र बिन्दु बन गए थे। मुगलकाल के कई नगर धार्मिक और सांस्कृतिक और शिक्षा कारणों से बहुत विकास किया। इनमें से कई सूफ़ी संतों के निवास व दरगाह तथा हिन्दू तीर्थ स्थानों के कारण तीर्थ यात्रियों के केन्द्र बिन्दु बने रहे। मुगलकाल के नगर विशाल क्षेत्रफल और जनसंख्या वाले थे।

मुख्य शब्द: व्यापारिक महत्व, सामरिक महत्व, यातायात व संचार, हस्तशिल्प, बन्दरगाह, सांस्कृतिक, सूफ़ी संत, दरगाह, तीर्थ यात्री।

-----X-----

प्रस्तावना

मुगलकाल में नगर राजनातिक और यातायात के मुख्य बिंदु होने के कारण यहाँ के लोगो ने बहुत प्रसिद्धि पाई थी मुगलकाल में नगर प्रशासनिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र रहे और सुरक्षा की दृष्टि से राजधानी व नगरों को तो चार दिवारी से घेर रखा था जैसे दिल्ली और आगरा। भारत की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहने के बावजूद शिल्प, कृषि और पशुधन उत्पादों के कारण शहरों से जुडी हुई थी। कई शहरों की स्थापना मुगल सूबेदार और बादशाहों ने की थी, जो बाद में लोगों की गतिविधियों का मुख्य केंद्र बन गये थे। जैसे - कन्नौज व कालपी के जागीदार दिलेर खाँ ने शाहजहाँ के शासन काल में शाहजहाँपुर नगर, मुजफ्फर खान -ए-खाना ने 1633 ई0 में मुजफ्फरनगर, रूस्तम खाँ ने मुरादाबाद, मुहम्मद खाँ बंगरा ने फर्रूखाबाद, ने गाजियाबाद, 1755 ई0 में नजीमुद्दौला ने नजीबाबाद तथा 1775 ई0 में फैजुल्ला खाँ ने रामपुर नगर की स्थापना की।

शोध-प्रविधि

प्रस्तुत शोध-पत्र, ऐतिहासिक विश्लेषण और वर्णनात्मक विधियों के आधार पर हैं। शोध-सामग्री को प्रमुख पुस्तकों से संकलित किया गया हैं।

शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र निम्नलिखित उद्देश्यों पर आधारित हैं-

मुगल काल के दौरान आपको शहरीकरण की स्थिति से परिचित कराने के लिए।

मुगल काल के दौरान शहरों का महत्व बताएं।

मुगल काल के दौरान शहरों की श्रेणियां प्रदर्शित करना।

मुगल काल के शहरों को उनके महत्व के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता हैं, लेकिन इस वर्गीकरण का मतलब यह नहीं है कि नगर जिस श्रेणी में रखा गया थे उसमें केवल वहीं कार्य होता था। वर्गीकरण केवल यह बताता हैं कि उस नगर में वह कार्य प्रमुख रूप से सम्पादित होता था

परन्तु अन्य कार्य भी नगर में गौण रूप से होते थे। मुगलकालीन नगरों के मुख्य प्रकार निम्नलिखित थे:-

1. धार्मिक संस्कृतिक नगर

धर्म शिक्षा व संस्कृति के केन्द्र के रूप में स्थापित नगरों को इस श्रेणी में रखा जाता है। बनारस, मथुरा, उज्जैन इत्यादि इसी प्रकार के नगरों का उदाहरण तथा इन नगरों में अनेक मन्दिर, मस्जिद तथा शिक्षा केन्द्र थे जहाँ लाखों की संख्या में श्रदालुओं का आवागमन लगा रहता था।

2. राजनीतिक प्रशासनिक नगर

ये नगर काफी हद तक राजनीति और प्रशासन के केंद्र थे, इसलिए इन नगरों का महत्व अपेक्षाकृत अधिक था। मुगल साम्राज्य की राजधानी के रूप में दिल्ली तथा आगरा, अवध की राजधानी के रूप फैजाबाद, उत्तर पश्चिम में लाहौर तथा दक्षिण में हैदराबाद। इसी प्रकार के नगर थे।

3. औद्योगिक -व्यापारिक नगर

इन नगरों को वाणिज्यिक केंद्रों के रूप में विकसित किया गया था। उनकी प्रसिद्धि का आधार वहाँ स्थापित उद्योग या शिल्प थे। अहमदाबाद, पटना, सूरत, लुधियाना ऐसे ही नगर थे। वस्त्र उद्योग अवध के खैराबाद और दरियाबाद शहरों की प्रसिद्धि का आधार था। बयाना को नील उत्पादन के लिए जाना जाता था।

मुगल काल के संदर्भ में धार्मिक शहरों की बात करते समय ध्यान रखना महत्वपूर्ण है। भारत में ऐसे शहर नहीं थे, जिन्हें विशुद्ध रूप से इस्लामी शहर कहा जा सकता था, लेकिन ऐसे शहरों की भी कमी नहीं थी, जिनकी अधिकांश आबादी मुस्लिम थी और जहाँ उनके जीवन पर इस्लामी संस्कृति की स्पष्ट छाप थी। जो इन नगरों को अलग ही पहचान प्रदान करती थी। दिल्ली, आगरा, लखनऊ, इलाहाबाद, लाहौर आदि इसी प्रकार के नगर थे। इन नगरों की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख जी० आर० हैम्बली ने इस प्रकार किया है-

1) दुर्गकृत महल 2) नदी के किनारे बसावट 3) मैदानी क्षेत्र 4) मुस्लिम धार्मिक इमारतों का बहुतायत में पाया जाना 5) बाजार तथा कारवा सराय होना। यह जरूरी नहीं कि उपयुक्त विशेषताएं सभी नगरों में समान रूप से पाई जाए परन्तु अधिकांश को अब भी इन नगरों में देखा जाता है।

उपनगरीय बस्तियों का बसना

मुगल काल में बड़े शहरों की मुख्य विशेषताओं में से एक यह रहा है कि इस काल के सभी विकृत शहरों की चार दिवारी के बाहर भी बस्तियां बसाई गईं। इस तरह की बस्तियां कई कारणों में से एक थीं कि नगर की जनसंख्या इतनी अधिक हो गई थी लोग नगर के परकोटा से बाहर बसने के लिए मजबूर हो गए थे जैसे दिल्ली व आगरा नगर। दूसरा कारण था नगर के बाहर किसी धार्मिक महत्व के स्थल के होने के कारण इसके इर्द-गिर्द लोगों का बस जाना। दिल्ली में निजामुद्दीन तथा चिराग देलही गांव की बस्तियां तथा लाहौर व कश्मीर गेट के बाहर कदम शरीफ की बस्ती इसी प्रकार आस्तित्व में आई। तीसरा कारण यह था कि कुछ अमीर और मनसबदारों को पार्क के बाहर स्थायी रूप से रहना पड़ता था, शाहजहानाबाद, जयसिंहपुर, जसवंतपुरा आदि जैसी बस्तियाँ।

मुगलकाल में नगर बसने की प्रक्रिया

मुगल काल में शहर बसने की प्रक्रिया में दो विशेषताएं हैं।

1. मुगल बादशाहों ने नए नगरों को बसाने की बजाए पुराने नगरों को ही विकसित करने की नीति अपनाई। इस युग में सम्राटों द्वारा केवल दो नगरों को नए रूप से बसाने का उल्लेख मिलता है एक अकबर द्वारा बसाया गया फतेहपुर सीकरी तथा दूसरा शाहजहाँ द्वारा बसाया गया शाहजहाँनाबाद।
2. इस समय में अधिकांश नए नगरों को जागीरदारों, शक्तिशाली जमींदारों तथा मनसबदारों द्वारा बसाया गया जैसे:- रामपुर, नजीबाबाद, गाजियाबाद, फरूखाबाद, मुरादाबाद आदि नगर स्थानीय सरदारों द्वारा बसाए गए हैं।

मुगलकालीन नगरों की जनसंख्या

मुगलकालीन स्रोतों से हमें उस समय के नगरों की आबादी संबंधी निश्चित आकड़े प्राप्त नहीं होते, फिर भी आबादी के संबंध में इतिहासकारों द्वारा कुछ अनुमान लगाया गया है कि

- 16 वीं शताब्दी की शुरुआत में लखनौती में 40,000 घर थे।
- अकबर के समय में, आगरा और फतेहपुर सीकरी लंदन की तुलना में बड़े शहर थे।

- शाहजहाँ के समय में, दिल्ली पेरिस से कुछ कम थी।

तीव्र नगरीकरण के कारण

विदेशी यात्रियों द्वारा की गई टिप्पणियों के आधार पर कहा जा सकता है कि मुगल काल के दौरान, तेजी से शहरीकरण हुआ था और शहरों की आबादी बढ़ रही थी। निजामुद्दीन अहमद के अनुसार, अकबर के समय में, शहरों की संख्या 3200 थी। इस तीव्र शहरीकरण को कई तत्वों का समर्थन प्राप्त था।

- मुगल सम्राटों ने भारत के एक बड़े भाग में शांति और व्यवस्था को स्थापित किया था। जो किसी भी प्रकार के भौतिक विकास जिसमें नगरीकरण भी शामिल हैं, के लिए जरूरी होती हैं।
- इस युग में मुगल सम्राटों के प्रोत्साहन के कारण शिल्प व व्यापार को प्रोत्साहन मिला। शिल्प तथा व्यापार की इस उन्नति ने भी नगरीकरण को गति प्रदान की।
- अनेक कारणों से ग्रामीण आबादी का प्रवास नगरों में हुआ। जिससे भी नगरीकरण में वृद्धि हुई।

मुगलकाल में नगरों के जीवन की दशा

- मुगलकाल में नगरों के जीवन के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी विदेशियों के विवरणों से मिलती हैं। विभिन्न विदेशी यात्री जो मुगलकाल में यहां आए उन्होंने अपने विवरणों में लिखा है कि - मुगलकाल के नगरों की स्थापना और विस्तार किसी योजना के अनुसार नहीं किया गया था।
- नगरों में मकान सामान्यतः निम्नकोटी के थे।
- नगरों के अन्दर मूलभूत जन सुविधाओं का लगभग अभाव था।
- नगरों में गरीब तथा अमीर के जीवन-स्तर के मध्य भारी अन्तर था।

मुगलकालीन नगरों की शासन व्यवस्था

हंबती के अनुसार, मुगलनगर प्रशासन के संदर्भ में उस काल के आधुनिक यूरोपीय नगरों से अलग था। इन नगरों का प्रशासन न तो राज्य चार्टर द्वारा शासित था और न ही नगरपालिका

प्रणाली इनमें पाई जाती थी। राज्य करों को इकट्ठा करने और नगरों में शांति बनाए रखने तक सीमित था। कहीं-कहीं पर बाजार की व्यवस्था एवं जल आपूर्ति का काम भी सरकार अपने हाथ में ले लेती थी। ऐसी स्थिति में नगर अपनी व्यवस्था को स्वयं देखते थे तथा इस व्यवस्था के संचालन में मोहल्ला की पंचायत विशेष भूमिका निभाती थी। कुछ समुद्र तटीय बन्दरगाहों की जिनका आर्थिक महत्व बहुत ज्यादा था तथा विदेशी भी पर्याप्त संख्या में रहते थे, व्यवस्था के लिए राज्य मुतसद्दी 5 नामक अधिकारी नियुक्त करता था।

सामान्य तौर पर नगर व कस्बों की व्यवस्था के साथ जुड़े राज्य के तीन प्रमुख अधिकारी थे, काजी, मुहतासिब तथा कोतवाल। मुहतासिब का कार्य नैतिक आचरण व नियमों को लागू करना, काजी का कार्य शरियत व न्याय व्यवस्था बनाए रखना तथा कोतवाल 6 नगर का प्रमुख अधिकारी था जो शांति व्यवस्था बनाए रखने तथा शहर की सम्पूर्ण व्यवस्था को देखने के लिए जिम्मेदार था।

सुदूर दक्षिण के मध्यकालीन नगरों की विशेषताएं

मुगलकालीन दक्षिण नगरों की कुछ प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार थीं।

- दक्षिण के नगरों में सामान्यतः प्रत्येक नगर का एक देवी या देवता होता था।
- जैसे -विजयनगर का विरूपाक्ष7, कांची की देवी - कामाक्षी8, मदुरई की देवी-मीनाक्षी इत्यादि।
- सुदूर दक्षिण में कभी-कभी नगरों की स्थापना मन्दिर के पूरक के रूप में हुई। जैसे वैकटेश्वर के मन्दिर के पूरक के रूप तिरुपति नगर की स्थापना रामानुज ने की।
- सुदूर दक्षिण के नगर जातियों, उपजातियों तथा सम्प्रदायों के मुख्यालयों के रूप में कार्य करते थे।
- दक्षिण के कई नगर सैनिक केन्द्र के रूप में किलेबन्द नगर के तौर पर आस्तित्व में आए। जिंजी, डिंडीगुल, वेल्लूर आदि इसी प्रकार के नगर थे।
- इस प्रकार मुगलकालीन नगर अपनी एक अलग विशेषता लिए थे

लेकिन विदेशी यात्रियों को इन शहरों में अच्छाई कम और बुराई ज्यादा दिखाई देती है, इसलिए उन्होंने ज्यादातर शहरों के खातों की आलोचना की है। फिर भी, मुगल शहर अपने शिल्प कार्य, आकार और व्यापार आदि के लिए विश्व प्रसिद्ध थे।

सन्दर्भ

1. भारत की जनगणना, बरेली एबी (2 वी), 1981, 11
2. मुगल साम्राज्य - भाग 1, 9, 23।
3. द प्रिंसेस एंड द पेंटरू विलियम डेलरिम्पल इन मोगुल दिल्ली, --- युथका शर्मा, 2013, 1707-1857।
5। मोगुल प्रांतीय सरकार, परमात्मा सरन, 1941; 1526-1658रू 216।
4. मध्यकालीन भारत त्रैमासिक, 5 119।
5. भारत। भारत का इतिहास - हिंदी, डॉ। मलित मलिक, २०।
6. वीके सुब्रमण्यन 26, 6, प्राचीन भारत की कला हाइन्स।

Corresponding Author

संजय कुमार*

प्राथमिक अध्यापक, निगम प्रतिभा बाल विधालय, नरेला मंडी
1पेज

e4sanjaye4@gmail.com